Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

# असमिया शब्द निर्माण में विविध जनजातियों का योगदान

**दिगंत बोरा**
**शोधार्थी, हिंदी विभाग**
**राजीव गांधी विश्वविद्यालय**
**रोनो हिल्स, इतानगर**
**अरुणाचल प्रदेश**

**सारांश :** मानव सभ्यता का इतिहास प्रवजन का इतिहास है । प्रवजन से मानव सभ्यता और संस्क्रित में समंवय हुआ है । इसी प्रवजन के कारण ही असमिया समाज और संस्कृति के साथ-साथ भाषा पर भी विविध जाति-जनजातियों का प्रभाव देखने को मिलती है । असमिया शब्द गठन में समय समय पर आये हुए विविध जनजातियों का प्रभाव देखने को मिलती हैं । जिनमें कछारी, आहोम, मिचिंग, मिचिमी, खाम्टी, नगा, नरा, मान, चुतिया आदि । इन जनजातियों से बहुर से शब्द असमिया भाषा में आयी है । जैसे – मानधपात, मान कचु मान लोगों के प्रभाव से आया है । उसी प्रकार भोट जलकिया, भोट लाई भूट लोगों के प्रभाव से आया है ।

**बीज शब्द :** असम, असमिया, भाषा, शब्द, जाति, जनजाति, संस्कृति, समाज, प्रवजन, सभ्यता, निर्माण, सामग्री, इतिहास, शब्द-भण्डार, कृषिजात, लोग आदि ।

**प्रस्तावना :**

मानव सभ्यता का इतिहास प्रवजन का इतिहास है । आदिम काल से प्रवजन के कारण ही मानव सभ्यता-संस्कृति का एक मिल-जुला रूप देखने को मिलता है । प्रवजन से समाज के साथ ही भाषा के शब्द भण्डार पर भी प्रभाव पड़ता है । एक जाति एक जगह दूसरी जगह जाते वक्त अपने साथ अपने भाषा-संस्कृति के साथ-साथ नित्य व्यवहार्य सामग्री भी ले जाती हैं । इसी तरह नया जाति अपने साथ जो सामग्री ले आती है, उसे उस जगह के पुराणे जाति नये जाति के आधार पर नामकरण करता हैं । इस तरह जाति के प्रवजन से समाज-संस्कृति के साथ-साथ भाषा पर भी प्रभाव पड़ता हैं ।

## असमिया शब्द निर्माण में विविध जनजातियों का योगदान :

असम में भी अनेक समय में अनेक जाति-जनजाति आकर रहने लगी थी । इस तरह नया जाति अपने साथ अपने भाषा-संस्कृति के साथ-साथ अपनी व्यवहार्य सामग्री भी ले आयी थी, जिसे असम के निवासी उसी जाति के नाम के आधार पर नामकरण किया हैं । तैरहवीं शताब्दी में पाटकाई पर्वत के उस पार से असम में आहोम (अहोम) जाति आयी थी, जो अपने साथ अपनी भाषा-संस्कृति-परंपरा और नित्य उपयोगी सामग्री भी ले आयी थी । आहोम अपने साथ जो भी सामग्री लायी थी, उस सामग्रियों असम के निवासी आहोम जाति के आधार पर ही नामकरण किया है । परंतु इन सभी वस्तुओं में से केवल दो कृषिजात सामग्रियों के नाम और एक बीमार के नाम पर आहोम जाति का प्रभाव देखा जा सकता है । जैसे - आहोम बगरी[1], आहोम शालि[2], आहोम घाव[3] आदि । इसके अतिरिक्त आहोम आठा[4] नाम के एक आठा भी मिलता है । पहले आहोम आठा का खेती किया जाता था । आहोम आठा की खेत करनेवाले लोगों ने दिहिंगिया रजा[5] को आहोम आठा के आठ पौधे उपहार स्वरूप भेंट किया था । इन आठ आहोम आठा के पौधे को जहाँ पर लगाया गया, उस जगह को आठाबारी[6] कहा जाता है । आहोम लोगों की गढ़[7] से आहोम गढ़[8], नाक से आहोम नका[9] आदि शब्दों का निर्माण हुआ हैं । इसके अतिरिक्त आहोम लोगों को लेकर असमिया भाषा में अनेक लोकोक्ति, मुहावरा, प्रवचन भी प्रचलित हैं । जैसे - 'आहोमर तले पुतल, आहोम भेलेंगा'[10], 'आहोमनीर कापोर'[11], 'आहोमर दिन'[12], 'आहोमर टोपोला'[13] आदि ।

---

[1] बेर के एक प्रकार

[2] धान के एक प्रकार

[3] घाव जो जल्दी ठीक नहीं होता है

[4] गॉम

[5]दिहिंगिया वंश के राजा

[6] एक जगह जो डिब्रुगढ़ में है

[7] चेहरा

[8] आहोम लोगों की तरह चेहरा

[9] आहोम लोगों की तरह नाक

[10] आहोम लोगों की तरह सहज-सरल

[11] कीमती कपड़ा

[12] अच्छे दिन

[13] कीमती और अच्छे सामान

असम के चारों ओर पर्वत-पहार है । इन पर्वत-पहार पर रहनेवाले लोगों को असम के लोग नगा कहते थे । नगा लोगों के साथ असम के लोगों का व्यापार वाणिज्य के साथ-साथ एक अच्छे संबंध भी बन गये थे । जिससे नगा संस्कृति के साथ-साथ नगा भाषा भी असम के संस्कृति और भाषा को प्रभावित किया था । नगा लोगों से जो भी सामग्री असम के लोग खरीदते थे, उसे असम के लोग नगा शब्द युक्त करके एक नया नाम देते थे । इस तरह के अनेक शब्द असमिया भाषा में देखने को मिलता हैं । कुछ कृषिजात सामग्री का नाम हैं – नगाकचु[14], नगामाह[15], नगाचकला[16], नगापाण[17] आदि । इसके अतिरिक्त नगाजेनेरु[18], नगाजापि[19], नगामाको[20] आदि वस्तु के नाम, स्वाभाव और प्रकृति से नगामता[21], नगाकटा[22], नगाकबेचा[23], नगार चांग तले बाट[24] आदि खंडवाक्य, 'नगार निर्मालि ल बोले'[25], 'होरोते थ'[26], 'नगाटो चाइ होराटो'[27], 'सजालो परालो नगाई निले बुलि'[28], 'नगायों निनिले माज डांगरी बुलि'[29] आदि प्रवचन भी नगा जनजातियों के प्रभाव से असमिया भाषा में आया हैं ।

मिरि[30] जनजातियों का प्रभाव भी असमिया भाषा के शब्द भण्डार पर दिखाई देता है । मिरि जाति के प्रभाव से कृषिजात सामग्रियों में मिरि आलू[31], मिरिका टेंगा[32], तथा मिरि

---

[14] आलू के एक प्रकार

[15] मुंग की तरह दाल

[16] कैला के पौधे

[17] पान के एक प्रकार

[18] गले में पहनने वाला एक आभूषण

[19] खेत में हल जोतते समय पहनने वाला टोपी से बड़ा एक सामान

[20] कपड़ा बुनने में व्यवहार किया जाता है

[21] नगा पुरूष

[22] नगा लोगों की तरह किसी चीज को काटना

[23] नगा लोगों को बेच देना

[24] नगा लोगों का मचान घर होते है जिस कारण से उनलोगों घर के नीचे से रास्ता होता है

[25] बिना नहाये आ जाना

[26] पास ही रख लेना

[27] व्यक्ति अनुसार थैला

[28]अपने लिए बनाया गया सामान कोई दूसरा व्यक्ति ले जाना

[29] कुरूप

[30] असम की एक जनजाति

[31] आलू के प्रकार, जो बालू में अच्छे होते है

[32] मिरिका बेर से बड़ा एक फल, जो खट्टा होता है

जिम[33] आदि शब्द आयी हैं । महत्वपूर्ण बात यह है कि मिरि जिम असमिया समाज में मिरि जनजाति से संपर्क में आने पहले से ही प्राप्त होता है, परंतु मिरि जनजातियों के प्रभाव से असमिया समाज भी जिम को मिरि जिम ही कहते हैं ।

शदिया[34] के आसपास शासन करनेवाले चुतिया[35] जाति का प्रभाव भी असमिया शब्द भण्डार पर दिखाई देती हैं । चुटिया जाति के नाम से भी असमिया भाषा में अनेक शब्द प्राप्त है जो इस बात का प्रमाण है । जैसे - चुटिया लफा[36], चुटिया धनु[37], चुटिया शालिका[38], चुटिया कारी[39] आदि ।

गौड़ देश से आने वाले लोगों को असम के लोग गरिया कहते है । इस जाति का प्रभाव भी असमिया शब्द भण्डार पर दिखाई देती है । गरिया आलू[40], गरिया खोदाई[41] ये दोनों शब्द इस जाति के प्रभाव से असमिया भाषा में आयी हैं । गरिया शब्दयुक्त एक प्रवचन भी असमिया भाषा में प्रचलित है - 'गरु हल गरिया, पो हल चार, जी हल नटिनी, उपाय मोर नाइ'[42] । कछारी[43] जनजाति के प्रभाव भी असमिया शब्द भण्डार पर देखने को मिलता है । जैसे कछारी शालि[44], कछारी मोर[45] आदि । मिचिमि लोगों के प्रभाव से मिचिमि तिता[46], मिकिर पूरा[47], मेचि दा[48] आदि चिंफो लोगों के प्रभाव से चिंफो नांगल[49], चिंफो मोना[50] आदि,

---

[33] मिरि लोगों के कपड़ा

[34] असम की एक जगह जो तीनचुकिया में है

[35] असम की एक जाति

[36] लफा एक शाक है

[37] चुतिया लोगों के धनुष

[38] एक पक्षी जो तोते की तरह बात कर सकता है

[39] असम की एक जगह जो लखिमपुर में है

[40] आलू के एक प्रकार

[41] एक कीड़ा

[42] उस पिता के पास कोई भी उपाय नहीं होते है जिनके सारे परिवार के सदस्य राह भटक गए है

[43] असम की एक जनजाति

[44] धान के एक प्रकार

[45] समझ में न आना

[46] एक औषधी पौधा

[47] गन्ना

[48]दाव के एक प्रकार जो लम्बा होता है

[49] हल जोतने के लिए व्यवहार किया जाता है

खाम्टी लोगों के प्रभाव से खाम्टी दा[51], खाम्टी मोना[52], खाम्टी शालि[53] आदि , मराण लोगों के प्रभाव से मराण आदा[54] आदि शब्द आयी हैं ।

ब्रहम के टाइशान राज्य को असम के लोग नरा राज्य और वहाँ के लोगों को नरा कहते थे । नरा राज्य की लोगों के साथ असम के लोगों का व्यापार-वाणिज्य के साथ-साथ वैवाहिक संबंध भी बन गये थे । जिससे असम की संस्कृति के साथ-साथ असमिया भाषा पर भी उन लोगों का प्रभाव देखने को मिलता हैं । असमिया शब्द भाण्डार पर नरा शब्द युक्त अनेक शब्द मिलता हैं । जैसे - नरा बगरी[55], नरा कापोर[56], नरा तगर[57], नरा चोला[58], नरा जांफाई[59] आदि । इसी प्रकार मान लोगों के प्रभाव से मान धपात[60], मानकचु[61], मान जलकिया[62], मान धनिया[63], मान लाइ[64] आदि । इसी प्रकार चीन के प्रभाव से चीना आलू[65], चीना लाइ[66], चीना बादाम[67], चीना हाँह[68] आदि । भोट लोगों के प्रभाव से भोट जलकिया[69], भोट एरा[70], भोट लाइ[71], भोटिया कुकुर[72] आदि ।

---

[50] थैला

[51] दाव के एक प्रकार जो पतला होता है और आगे की और फैला हुआ

[52] थैला

[53] धान के एक प्रकार

[54] अढरक के एक प्रकार जो भीतर से स्याही की तरह होता है

[55] बेर के एक प्रकार जो पकने पर लाल हो जाती है

[56] पहनने की एक कपड़ा

[57] फूल

[58] पुरूष की कपड़ा

[59] कानफूल

[60] तंबाकु के पत्ते

[61] आलू के एक प्रकार

[62] मिर्चा के प्रकार जो बड़ा होता है

[63] धनिया के प्रकार

[64] लाइ के एक प्रकार जिसके पत्ते बड़े-बड़े होते है

[65] आलू के एक प्रकार

[66] लाई के एक प्रकार जो सफेद और जिसके पत्ते बड़े-बड़े होते है

[67] बादाम

[68]हंस के प्रकार जिसके माथे पर फूल होता

[69] मिर्चा के प्रकार, जो बड़ा होता

[70]एक पौधा, जिसका पत्ता एड़ी नाम के एक कीड़ा को खिलाया जाता है . एड़ी कीड़ा से निकलने वाला सूत से एड़ीया चादर बनाया जाता है जिसे ठंडे के मौसम में औड़ा जाता है

[71] लाइ के एक प्रकार

प्राचीन असमिया भाषा में बंगाल शब्द विदेशियों के लिए प्रयोग होता था । मुगल, पठान आदि को असम के लोग बंगाल कहते थे, यहाँ तक कि अंग्रेजों को बगा बंगाल[73] कहते थे । इसलिए असमिया भाषा पश्चिम के प्रभाव से असम में आने वाले बहुत से वस्तुओं में बंगाल शब्द युक्त हैं । जैसे - बंगाली एरा[74], बंगाली बगरी[75], बंगाली मधुरि[76], बंगाली मालभोग[77], बंगाली पूरा[78], बंगाली जिका[79] आदि ।

असमिया भाषा के जातिगत नामों से बनने वाले शब्दों से असम और दूसरे राज्य के बीच सांस्कृतिक विनिमय का आभास मिलता है । इस तरह से विविध जाति-जनजातियों के प्रभाव से असमिया भाषा में विविध शब्दों का आगमन हुआ हैं । इन शब्दों से असमिया भाषा के शब्द भण्डार मजबूत हुआ है और असमिया भाषा के ग्रहण क्षमता का पता चलता है ।

---

[72] कुत्ते के प्रकार जिसका मूँह दूसरे कुत्ते से अलग और छोटा होता है

[73]बंगाली जो पश्चिम बंगाल में रहते है . असम में पहले विदेशियों को बंगाल कहा जाता था

[74] एक पौधा जिसका पत्ता एड़ी नामक कीड़ा को खिलाया जाता है, जिसके पत्ते का रंग कफी की तरह होता है

[75]बेर के प्रकार

[76] अमरूद के प्रकार

[77] कैला के एक प्रकार, जो खाने बहुत स्वादिष्ट होता है

[78] गन्ने के प्रकार जो मोटा और लम्बा होता है, जो दूसरे गन्ने से कोमल होता है

[79] भिंडी